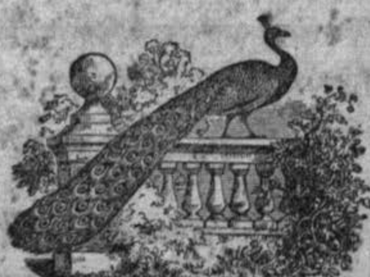
॥ श्री हरिः ॥

श्री कृष्ण गीतावली

श्री गोस्वामी तुलसी दास जी रचित

"सन्त सुखदानी जगदीसहू के मनमानी,
प्रेम रससानी बानी तुलसी गोसाईं की"

श्रीपंडित गौड़ दामोदर शर्म्मा संशोधित और प्रकाशित



मिरज़ापूर।

आनन्द कादम्बिनी यन्त्रालय में मुद्रित हुई।

सं० १८८८ ई०

मूल्य =) आना।

उपक्रम ।

प्रिय पाठक !

यह पुस्तक जिससे छापी गई वह बनारस बूला नाला रामकुमार मिश्र के लेथो ग्राफिक प्रेस में सं० १९२४ की मुद्रित थी कि जो अत्यन्त अशुद्ध और भृष्ट थी और यद्यपि मैंने यथा साध्य और यथा मति बहुत कुछ शुद्ध किया है परन्तु यदि फिर भी कुछ अशुधि मिले तो आशा है कि वह आप सज्जन समूह क्षमा कर पत्र द्वारा विज्ञप्ति दे चिर वाधित करेंगे ।

विशेष यह कि जिन्हें यह पुस्तक लेनी हो निम्न लिखित स्थान पर मूल्य भेज कर मुझसे मँगालें ॥

भवतां कृपाकांक्षी
प्रकाशक
पण्डित गौड़ दामोदर शर्म्मा
अमीलहा—मिरज़ापूर ।

श्रीगणेशायनमः

श्री कृष्ण गीतावली।

श्री कृष्णायनमः

राग बिलावल।

माता लैउछंग गोबिंद मुख बार बार निरखै। पुलकित तनु आनंद घन छन छन मन हरखै॥ ध्रुवम्॥ पूछत तोतरात बात मातहिं यदुराई। अतिसै सुख जाते तोहि मोहि कहु समुझाई॥ देखत तुव बदन कमल मन आनंद होई। कहै कौन सुरनर मुनि जानैं कोइ कोई॥ सुंदर मुख मोहिं देखाउ इच्छा अति मोरे। मम समान पुण्य पुंज बालक नहिं तोरे॥ तुलसी प्रभु प्रेम बिबश मनुज रूप धारी। बालकेलि लीला रस ब्रज जन हित कारी॥ १॥

राग ललित।

छोटी मोटी मीसी रोटी चिकनी चुपरि कै तू। देरी मैय्या-लै कन्हैय्या सो कब अबहिं तात॥ सिगरियै हौंहि खैहौं बल-दाऊ को न दैहौं सोक्यौं भटू तेरी कहा कहि इत उत जात। ध्रु०॥ बाल बोलि डहकि बिरावत चरित लखि गोपी गण म-हरि मुदित पुलकित गात॥ नूपुर की धुनि, किंकिनी की क-

ल रव कूदि कूदि किलकि किलकि ठाढे ठाढे खात ॥ तनिआं ललित कटि बिचित्र टेपारे शिशु मुनि मन हरत बचन कहे तोतरात ॥ तुलसी निरखि हरखि बरषत फूल भूरि भागी व्रजबासी बिबुध सिद्ध सिहात ॥ २ ॥

राग आसावरी ।

तोहि श्याम की शपथ यशोदा आइ देखु गृह मेरे । जेसी हाल करी यहि ढोटा छोटे निपट अनेरे ॥ ध्रु० ॥ गोरस हानि सहौं न कहौं कछु एहि व्रज बास बसेरे । दिन प्रति भाजन कोनबिसे है घर निधि कान्ह केरे ॥ किये निहोरी हंसत खिजेतें डांटत नयन तरेरे । अबहीतें ऐसिये कहां धौं चरित ललित सुत तेरे ॥ बैठे सकुचि साधु भयो चाहत मातु बदन तन हेरे । तुलसि दास प्रभु कहांति वातें जे कहि भजे सजेरे ॥ ३ ॥

मोकहं झूठहुं दोसु लगावहिँ । मैय्याइनहिं बानि पर गृह की नाना युक्ति बनावहिं ॥ ध्रु० ॥ इन्हके लिये खेलिवो छाड़ो तऊन उबरन पावहिं । भाजन फोरि बोरि करगोरस देन उलहनौं आवहिँ । कबहुंक बाल रोवाइ पानि गहि मिसएहि करि उठि धावहिं॥ करहिं आपु शिर धरहिं आनके बचन बिरंचि हरावहिं । मेरी टेव बूझ हलधर सौं संतत संग खेलावहिं ॥ जीआन्याउ करहिं कान्ह को ते शिशु मोहि न भावहिं। सुनि सुनि बचन चातुरी ग्वालिनि हंसि हंसि बदन दुरावहिं ॥ बाल गोपाल केलि कल कीरति तुलसि दास मुनि गावहिं ॥ ४ ॥

कबहुं न जात पराये धामहिं । खेलतही देखौं निज आंगन सदा सहित बलरामहिं ॥ ध्रु० ॥ मेरे है गोरस को नवनि-

धि सुंदर मंदिर यामहिं। ठाढ़ी ग्वालि ओरहना के मिस आइ बकहि बे कामहिं। हौंबलि जाउं जाउ कितहू जनि मातु सिखावति श्यामहिं॥ बिनु कारण हठि दोसु लगावति तातगये गृह तामहिं। हरि मुख निरखि परुष बानी सुनि अधिक अधिक अभि रामहिं॥ तुलसि दास प्रभु देखोइ चाहति श्री उर ललित ललामहिं॥ ५॥

अब सब सांची कान्ह तिहारी। जो हिंमत जे पाइगो मोहन गृह आये दै गारी॥ सुसुकि सभीत सकुचि रूखे मुख बातें सकल संवारी। साधु जानि हंसि हृदय लगाये परम प्रीति महंतारी॥ कोटि यतन करि सपथ कहैं हम मानै कौन हमारी। तुमहिं बिलोकि आन की ऐसी क्यों कहि है बरनारी॥ जैसे हो तैसे सुख दायक ब्रज नायक बलिहारी। तुलसि दास प्रभु सुख छवि निरखत मन सब युक्ति बिसारी॥ ६॥

राग केदारा।

महरि तिहारे पांय परौं अपनो ब्रजलीजै। सहि देख्यो तुमसों कह्यो अब नाकहिँ आयो पौन दिनहुं दिन छीजै॥ ध्रु०॥ ग्वालिनि के गोरस एक नवनिधि ताबिनु क्यों कर जोजै। सुत समेत पांउ धारि आपुहि भवनहिं देखिय जौन पतीजै॥ अति अनीति नीकी नहि जसुमति अजहूं सिष एहि दीजै। तुलसि दास उरलाइ महरि कह अस वलि कबहु न कीजै॥ ७॥

अबहिँ उरहनो दै गई बहुरो फिरि आई। सुनु मैया तेरी सौं करौं याको टेव लरन की सकुच बेचेसि खाई॥ ध्रु०॥ या ब्रज मे लरिका घने हौंही अन्याई। मुह लाए मूड़हिं चढ़ी

अंतहु अहिरिनि तोहि सूधी करि पाई॥ सुनि सुत की अति चातुरी यशोमति मुसु काई। तुलसि दास ग्वालिनि ठगी आय न उतरु कछु कान्ह ठगोरी लाई॥ ८॥

राग गौरी।

अब व्रज बास महरि कस कीवो। दुध दही माखन ढारत है छुतो पोसात दान दिन दीवो॥ ध्रु०॥ अब तो कठिन कान्ह के करतब तुम्ह हो हंसति कहा कहि लीबो। लीजे गांव नांव लै रावरी है जग ठाउं कहूं ह्वैं जीवो॥ ग्वालि बचन सुनि कहति यशोमति भलीन भूमि परि बादर छीवो। दहअेहि लागि कहा तुलसी प्रभु अजहु न तजत पयो धर पीवो॥ ८॥

जानो है ग्वालिनि परी पौरि फीके। मातु काज लागी लखि डाटत है बायनो दियो घर नीके॥ अब कहि देउं कहति किन यौं कहि मांगत दही धयो जो छीके। तुलसी प्रभु मुख निरखि रही चकि रह्यो न सयानप तन मन तीके॥ १०॥

जौलौं हौं कान्ह रहौं गुण गोऐ॥ तौलौं तुमहिँ पत्यात लोग सब सुसुकि सभीत सांच सो रोऐ॥ ध्रु०॥ हौ नभवो पर रंग गढि बैठे अब ऐ गढत महरि मुह जोऐ॥ चुपकि न रहत कहाय कछु चाहत ह्वै है कीच कोठिला धोऐ। गरजति कहा तरजनिन्ह तरजत बरजत सयन नयन के कोऐ॥ तुलसी मुदित मातु सुत गति लखि वियकी है ग्वालि मयन मन मोऐ॥ ११॥

भूलि न जात हो काह्न के काज। साखि सखा सब सुबल सुदामा देखि धौं बूझि बोलि बल दाज॥ ध्रु०॥ यहतो मोहि

खिझाइ कोटि बिधि उलटि विवाद न आइ अगांऊ। याहि कहा मैय्या मुह लावति गनती किये लँगरि भगराऊ ॥ कहति परस्पर वचन यशोमति लखि नहि सकति कपट सति भाऊ। तुलसि दास ग्वालिनि अति नागरि नट नागर मणि नंद ललाऊ ॥ १२ ॥

छाड़ो मेरे ललित ललन लरिकाई। ऐहैं देखु कालि तेरे वे व्याह कि बात चलाई ॥ ध्रु० ॥ डरि हैं सासु ससुर चोरी सुनि हंसि है नई दुलहिया सुहाई। उबटि न्हाहु गुहौं चोटिआ बलि देखि भलो बर करहिं बड़ाई ॥ मातु कह्यो करि कहत बोलि दे भइ बड़ि बार कालि तो न आई। जब सोइबो तात यों हां कहि नयन मीचि रहे पौढ़ि कन्हाई ॥ उठि कह्यो भोर भयी भंगुलोदै मुदित महरि लखि आतुर ताई। बिहंसी ग्वालि जान तुलसी प्रभु सकुचि लगे जननो उर धाई ॥ १३ ॥

राग केदारा।

हरिको ललित बदन निहारु। निपटहिं डांटत निठुर ज्यों लकुट कारते डारु ॥ ध्रु० ॥ मंजु अंजन सहित जलकन चुवत लोचन चारु। श्याम सार सम मगनसनो शशि स्रवत सुधासिंगारु ॥ सुभग उर दधि बुंद सुंदर लखि अपनपो वारु। मनहुं मरकत मृदु सिखर पर लसत बिसद तुषारु ॥ कान्हहूं पर सतरभौंहैं महरि मनहिं बिचारु। दास तुलसी रहति क्यों रिस निरखि नंद कुमारु ॥ १४ ॥

लेत भरि भरिनीर कान्ह कमल नैन। फरके अधर उर निरखि लकुट कार कहि न सकात कछु बैन ॥ ध्रु० ॥ दुसह दांवरि

छोरि थोरो खोरि कहां कीन्हो चीन्होंरी सुभाउ तेरो आजुलग माइ मैन। तुलसि दास नंद लाल ललित लखि रिसक्यों रहति उर अैन ॥ १५ ॥

हाहारी महरि बिचारों कहा रिस बसभई कोंखि के जाये सों रोसकेती बड़ो कियो है। ढीलि करि दांवरी बावरी सांवरेहु देखु सकुचि सहमि शिशु भारी भय भयो है ॥ ध्रु० ॥ दूध दधि माखन भो लाखन गोधन धन जबते जनम हलधर हरि लियो है। खायोके खवायो के बिगाख्यो लरिकारी अैसे सुत पर कोहु कैसो तेरो हियो है ॥ मुनि कहै सुकृती नंद यशोमति सम भयो न भावी नहि बिद्यमान बियो है ॥ कौन जाने कोनि तप कीने योग याग जप कान्ह सोसुअन तोकों महादेव दियो है। इनही के आयेतें बधाये व्रज नित नये नादत बाढ़त सब सब सुख जियो है॥ नंदलाल बाल जस संतसुरसरबस गाइ सो अमियरस तुलसिहु पियो है ॥ १६ ॥

ललित लाल निहारि महरि मन बिचारि डारि दे बरबंसी लकुट बेगि करतें। कछु न कहि सकत सुसकात सकुचत डरहु को डरु कान्ह डरे तेरे डरतें ॥ ध्रु० ॥ कह्यो मेरो मानि हित जानि तूं सयानी बड़ी बड़े भाग पायो पूतबिधि हरिहरतें ॥ ताहि बांधिबे को धाई ग्वालिनि गोरस बिगाइ लैलै आई वरी दाव घर घरतें॥ कुलगुरुतीय के बचन कामनीय सुनि सुधि भये बचन जी सुने मुनि वरतें। छोरि लिये लाइ उर वरषें सुमन सुर मंगल है तिहुं पुर हरि हल धरतें॥ आनंद बधावनो मुदित गोप गोपीगण आजु परी कुशल कठिन कर

बरतें । तुलसी जे तोरे तरु किये देव दियो बरु को न लह्यो कौन फरु देव दामोदरतें ॥ १७ ॥

राग मलार ।

व्रज पर घन घमंड करि आये । अति अपमान बिचारि आपनो कोपि सुरेस पठाये ॥ ध्रु० ॥ दमकति दुसह दसहूं दिसि दामिनि भयो तम गगन गंभीर ॥ गरजत घोर बारि धर धावत प्रेरित प्रबल समीर ॥ बार बार पबिपात उपलघन बरषत बूंद बिशाल । सीत सभीत पुकारत आरत गोसुत गोपी ग्वाल ॥ राखहु राम कान्ह एहि औसर दुसह दसा भय आई । नन्द बिरोध कियो सुर पति सों सो तुम्हरोइ बलपाई ॥ सुनि हंसि उठ्यो नंद को नाहरु लिय कर कुधर उठाई । तुलसि दास मघवा अपनो सो करि गयो गर्व गंवाई ॥ १८ ॥

राग गौरी ।

टेरी कान्ह गोधन चढि गैय्या । मथि मथि पियो बार चारिक मैं भूषन जाति अघातु न दैय्या ॥ ध्रु० ॥ शैल सिषर चढ़ि चितै चकित चित अति हित बचन कह्यो बल भैय्या । बांधि लकुटि पट फेरि बोलाई सुनि कल बेनु धेनु धुकि धैय्या । बल दाऊ देखिअत दूरितें आवति छाक पठाई मैय्या ॥ किलकि सखा सब नटत मोर ज्यों कूदत कपि कुरंग की नैय्या । खेलत खात परस्पर उहंकत छीनत कहत करत रगरैय्या ॥ तुलसी बाल केलि सुख निरषत बरषत सुमन सहित सुर सैय्या ॥ १९ ॥

गावत गोपाल लाल नीके राग नट हैं । चलोरी आली देषन लोयन लाहु पेषन ठाढे सुरतरु तर तटिनीके तट हैं ॥ मोर

चंदा चारु सिर मंजु गुंजा पुंज धरे बनी बन धातु तनु ओढ़े पीत पट हैं। मुरली तान तरंग मोहे कुरंग बिहंग जोहैं मूरति त्रिभंग निपट निकट हैं॥ अंबर अमर हरषत बरषत फूल सनेह सिथिल गोप गाइन के ठठहैं। तुलसी प्रभु निहारि जहँ तहँ ब्रज नारिठगी ठाढ़ी मग लिए रोते भरे घटहैं॥ २०॥

राग बिलावल।

देखु सखी हरि बदन इंदु पर। चिक्कन कुटिल अलक अवली छबि कहि न जाइ शोभा अनूप बर॥ बाल भुअंगिनि कर मनहुं मिलि रह्यो घेरि रस जानि सुधा कर। तजि न सकहि नहि करहि पान कहो कारण कौन बिचारि डरहि डर॥ अरुण बनज लोचन कपोल शुभ श्रुति मंडित कुंडल अति सुंदर। मनहु सिंधु निज सुतहि मनावन पठयो युगल बसीठ बारि चर॥ नंद नँदन मुख की सुंदरता कहि श्रुति शेष उमा बर। तुलसिदास त्रैलोक्य बिमोहन रूप कपट नर त्रिबिध शूलहर॥२१॥

आजु उनीदे आए मुरारी। आलसवंत सुभग लोचन सखि छिन मूंदत छिन देत उघारी॥ मनहु इंदुपर खंजरीट द्वै कछुक अरुण बिधि रचे संवारी। कुटिल अलक जनु मार फंद कर गहे सजग ह्वै रह्यो संभारी॥ मनहुं उड़न चाहत अति चंचल पलक पंख छिन देत पसारी। नासिक कीर बचन पिकसुनि करि संगति मन गुनि रहत बिचारी॥ रुचिर कपोल चारु कुंडल बर भ्रुकुटि सरासन की अनुहारी। परम चपल तेहि त्रास मनहुं खग प्रगटत दुरत न मानत हारी॥ जदुपति मुख छबि कल्पकोटि लगि कहि न जाइ जाके मुख चारी। तुलसि

दास जेहि निरखि ग्वालिनी भजी तात पति तनय बिसारी ॥२२॥

राग गौरी

गोपाल गोकुलबल्लबीप्रिय गोसुतबल्लभं । चरणारविंद महं भजे भजनीय सुरनरदुर्लभं ॥ घनश्याम काम अनेकछबि लोकाभिराम मनोहरं । किंजल्क बसन किशोर मूरति भूरि गुण करुणा करं ॥ सिर केकिपच्छ बिलोल कुंडल अरुण बनरुह लोचनं । गुंजावतंस बिचित्र सब अंग धातु भव भय मोचनं ॥ कच कुटिल सुंदर तिलक भ्रू राकामयंक समाननं । अपहरत तुलसी दास त्रास बिहार बृन्दा काननं ॥ २३ ॥

बिछुरत श्री ब्रज राज आजु इन नयनन की परतोति गई । उड़िन लगी हरि संग सहज तजि ह्वै न गए सखि स्याम मई ॥ रूप रसिक लालची कहावत सो करनी कछु तो न भई । सांचेहु कूर कुटिल सित मेचक वृथा मीन छबि छीन लई ॥ अब काहे सोचत मोचत जल समय गए चित शूल नई । तुलसि दास जड़भये अपहुंते जब पलकनि हठि दगा दई ॥ २४ ॥

राग केदारा ।

नहिं कछु दोस श्याम को माई । जो दुख मैं पायउं सुनि सजनी सोतो सबै मन की चतुराई ॥ निज हित लागि तबहि येहि बंचक सब अंगनि बसि प्रीति बढ़ाई । लियो जो सब सुख हरि अंग संग को जहं जो बिधि तहं सोइ बनाई । अब नंदलाल गवन सुनि मधुवन तनुहिं तजत नहिं बार लगाई ॥ रुचिर रूप जल मो रससि ह्वै मिल न फिरन की बात चलाई । एहि शरोर बसि सखि वा सठ कहुं कहि न जाइ जो निधि फिरि

आई ॥ तदपि कछु उपकार न कीन्हो निज मिलनीं नहि मोहि सिखाई। आपु मिल्यो एहि भांति जाति तजि तनु मिलयो जल पय की नाई ॥ ह्वै मेरो आयो सुफलक सुत लै गयो चोर नीर बिल गाई। मनहू तज्यो कान्हहूँ त्यागी प्राणी चलिहैं परमिति पाई ॥ तुलसि दास रीतेहु तन उपर नयनन को ममता अधिकाई ॥ २५ ॥

राग धनाश्री।

करिहैं हरि बालक कीसी केलि। हरष न रचत बिषाद न बिरचत डगरि चले हँसि खेलि॥ बोड़ बनाइ बारि बृंदाबन प्रोति सजीवनि बेलि। सींचि सनेह सुधा खनि काटो लोक बेद पर हेलि॥ तृण ज्यों तजि पाली तनु जो हम बिधि वा सब वल पेलि। एतेहुं पर भावत तुलसी प्रभु गये मोहनी मेलि॥ २६ ॥

अलि अब कहुं जिन नेह निहारो। समुझै सहै हमारो है हित बिधि बामता बिचारी ॥ सत्य सनेह शील शोभा सुख सब गुण उदधि अपारी। देख्यो सुन्यों न कबहूं काहू मीन बियोगी बारो। कहियत काह कूबरीहूं को सेवत हैं बन वारी ॥ बिषते बिष गावन की अनहित सुधा सनेही गारो॥ मन फेरियत कुतर्क कोटि करि कुबल भरोसे भारो। तुलसी जब दूजो न देखि अत कान्ह कुंवर अनुहारो॥ २७ ॥

राग केदारा।

लागिये रहति नयननि आगे ते न टरति मोहन मूरति। नील नलिन श्याम शोभा अगनित काम पावन हृदय जेहि उर फूरति॥ शारद अमित शेष कहि न सकत अंग २ सूरति।

तुलसी दास बड़े भाग मन लागेहुतें सब सुख पूरति ॥ २८ ॥

जबतें ब्रज तजि गये कन्हाई। तबतें बिरह रबि उदित एक रस सखि बिछुरन वृष पाई ॥ घटत न तेज चलत नाही रथ रह्यो उर नभ परछाई ॥ इंद्रिय रूप रासि सोचहिं सुठि सुधि सब की बिसराई। भयें बिशोक कोक नद भ्रम भ्रमरनि सुखदाई ॥ चित चकोर मन मोर कुमुद कुइ सकल बिकल अधिकाई। तनु तड़ाग बलबारि सूखन लाग्यो परि कुरूपता काई ॥ प्राण मोन दिन दिन दूबरे दसा दुसह अब आई। तुलसिदास मनोरथ मय मृग मरत जहां तहं धाई। राम श्याम सावन भादौं बिनु जिय की जरनि न जाई ॥ २९ ॥

शशितें सीतल मोकौं लागै माईरी तरनि। याके उऐ बरति अधिक अंग अंग दव वाके उऐ मिटति रजनी जनित जरनि सब बिपरीत भये माधव बिनु हित जौंकरत अनंत सकी रनि। तुलसी दास श्याम सुंदर बिरह की दुसह दसा सो मोपै परति नहिं बरनि ॥ ३० ॥

संतत दुखद सखी रजनी कर। स्वारथ रत तव अबहुं एक रस मोको कबहुन भयो तापहर। निज अंसिक सुख लागि चतुर अति कीन्हो प्रथम निसा शुभ सुंदर ॥ अब बिनु मन तन दहत दया तजि रावत रबि के नयन बारिधर। यद्यपि है दारुण बड़वानल राख्यो जलधि गंभीर धीर तर ॥ तेहुते परम कठिन जान्यो शशि तज्यो पिता तब भयो व्योमचर। सकल बिकार कोष बिरहिनि रिपु काहेते याहि सराहत सुर नर॥ तुलसि दास त्रैलोक्य मान्य भयो कारण इहे गह्यो गिरिजाबर॥ ३१ ॥

राग मलार।

कोउ सखि नई चाह सुनि आई। यह ब्रज भूमि सकल सुरपति सो मदन मलिक करि पाई॥ घन धावन बकपांति पटो सिख राखत तड़ित सोहाई। बोलत पिक नकीब गरजनि मिस मानहुं फिरत दोहाई॥ चातक मोर चकोर मधुप सुक सुमन समीर सहाई। चाहत कियो बास हृदा बन बिधि सों कछु न बसाई॥ सींवन चांपि सको काह्न तब जब हुतिराम कन्हाई। अब तुलसी गिरिधर बिनु गोकुल को करिहै ठकुराई ३२

राग सोरठा।

ऊधो या ब्रज की दसा बिचारो। तापाछे यह सिखि आपनी योग कथा बिस्तारो॥ जा कारण पठये तुम माधव सो सोचहु मन मांही। कैतिक बीच बिरह परमारथ जानत हौ किधौं नाहीं॥ परम चतुर निज दास श्याम के संतत निकट रहत हौ। जल बूड़त अवलंब फेन को फिरि फिरि कहा गहत हौ॥ बय अति ललित मनोहर आनन कौने यतन बिसारौं। योग युक्ति अरु मुक्ति बिबिध बिधि वा मुरली पर वारौं॥ जेहि उर बसत श्याम सुंदर घन तेहि निर्गुण किमि आवै। तुलसिदास सो भजन बहावो जाहि दूसरी भावै॥ ३३॥

मधुकर कहहु कहन जो पारो। नाही बलि अपराध रावरो सकुचि साध जनि मारो॥ नहि तुम ब्रज बसि नंद लाल को बाल बिनोद निहारो। नाहिंन रास रसिक रस चाख्यो ताते डेल सो डारो॥ तुलसी जीन गये प्रीतम संग प्राण त्यागि तनु न्यारो। तो सुनिबो देखिबो बहुत अब कहा करम सो

चारी ॥ ३४ ॥

ऊधो जू कह्यो तुम्हारोइ कीबो। नीके जिय की जानि अपने पैं समुझि सिखावनि दीबो ॥ स्याम बियोगी व्रज के लोगनि योग योग जौ जानो। तौ सकोच परि हरि पालागौं परमारथहिं बखानो ॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब रहत रूप अनुरागी ॥ दीन मलीन छीन तनु डोलत मीन सजा सौं लागी। तुलसी है सनेह दुख दायक नहिं जानत अस को है ॥ तऊ न होत कान्ह कोसो मन सबे साहिबहिं सोहै ॥ ३५ ॥

राग बिलावल।

सो कहो मधुप जो मोहन कहि पठई। तुम सकुचत कत होहिं नीके जानति नंद नंदन निपट करि सठई ॥ इतोन सांचो सनेह मिथ्यो मनको संदेहु हरि परेउ संदेह संदेसहु ठठई। तुलसी दास न आस मिलन की कहि गये काछु सीतो एको न चित ठई ॥ ३६ ॥

मेरे जान और कछु न मन गुनिऐ। कुबरो रवन कान्ह कही जो मधुप सौं सोइ सिख सजनी सुचित दै सुनिऐ॥ काहे कौं करति रोषु देहै धौं का को दोषु निज नयनन को बयो सब लुनिऐ। दारु शरीर कीट पहिले सुख सुमिरि सुमिरि निसि बासर धुनिऐ ॥ ऐ सनेह सुचि अधिक अधिक रुचि बरजो न करत कितो सिर धुनिऐ। तुलसि दास अब नंद सुअन हित बिषम बियोग अनल तनु हुनिऐ ॥ ३७ ॥

भली कहि अलि हमहूं पहिचाने। हरिहिं निर्गुण निर्लेप निरापन निपट निठुर निज काज सयाने ॥ व्रज को प्रि-

अरु संग महरि को कुबरिहिं बरनत नेकु लजाने॥ समुझि सो प्रीति की रीति श्याम की सोइ बावरी जो परेखो उर आनै। सुनत न सिख लालची बिलोचन एतेहु पर रुचि रूप लोभाने॥ तुलसि दास इहै अधिक कान्ह पहिं नीकेइ लागत मन रहत समाने॥ ३८॥

राग मलार।

जौपै अलि अंत इहै करिवे हो। तौ अतुलित अहीर अबलनिको हठिन हियो हरिवे हो॥ जो प्रपंच परि नाम प्रेम फिर अनुचित आचरिवेहो। तौमथुराहि महा महिमा लहि सकल ढरनि ढरिवेहो॥ दै कूबरिहिं रूप ब्रज सुधि भए लौकिक डर डरिवे हो॥ ज्ञान बिराग काल कृत करतब हमरेहिं सिर धरिवेहो। उनहिं राग रवि नीरद जल ज्यों प्रभु परमिति परिवे हो॥ हमहुं निठुर निरुपाधि नेह निधि निज भुज बल तरिवे हो॥ भलो भयो सब भांति हमारो एक बार मरिवेहो। तुलसी कान्ह बिरह नित नव ज्वर जरि जीवन भरिवेहो॥ ३९॥

ऊधो यह ह्यां न कछू कहिबेहीं। ज्ञान गिरा कूबरी रवनकी सुनि बिचारि गहिबेहीं॥ पाइ रजाइ नाइ शिर गृह ह्वै गति परमिति लहि बेहीं। मति मटुको मृग जल भरि घृत हित मनहीं मन महि बेही॥ गाड़े भली उखारे अनुचित बनि आये कहिबेहीं। तुलसी प्रभुहिं तुमहीं हमहूं हिय गासति सोस हिबेहीं॥ ४०॥

मधुकर कान्ह कही तन होंहीं। कै ये नई सीखि सिखई हरि निज अनुराग बिछोहीं॥ राखो संचि कूबरी पीठ पर ये बातें

बकुचौंहीं। श्याम सो गाहकु पाइ सयानी खोलि देखाइ है गोंहीं॥ नागर मणि सोभा सागर जेहिं जग युवती हंसि मोहीं। लियो रूप दे ज्ञान गाठरी भलो ठग्यो ठगु औंहीं॥ हैं निर्गुण सारी बालिक बलि घरी घरी हम जोंहीं। तुलसी ये नागरिन योग पट जिनहुं आजु सब सोंहीं॥ ४१॥

मधुप तुम कान्हहि की कही क्यौंन कही है। यह बतकही चपलि चेरी को निपट चरेरि रही है॥ कब ब्रज तज्यो ज्ञान कब उपज्यो कब बिदेहता लही है। गये बिसारि रीति गोकुल की अब निर्गुण गति गही है॥ आयसु देहु करौं सोइ थिर धरि प्रीति परमिति निबही है॥ तुलसी परमेश्वर न सहैगो हम अबलनि सब सही है॥ ४२॥

टीनो है मधुप सबहि सिख नोकी। सोइ आदरो आस जाके जिय बारि बिलोवत घीकी॥ बूझी बात कान्ह कुबरी की मधुकरहु जनि पूछो। ठालो ग्वालि जानि पठये अलि कह्यो पछोरन छूछो। हमहूं कछुक लखीही तबहीं औरे नंदलला-की॥ ये अब लही चतुर चेरी पै चोखो चाल चलाकी। गये करतें घरतें आंगनतें ब्रजहूं तें ब्रज नाथ॥ तुलसी प्रभु गयो चहत मनहुंतें सो तो हमरे हाथ॥ ४३॥

ताकी सिख ब्रज न सुनैगो कोइ भोरे। जाकी कहनि रहनि अनमिल अति सुनत समुझियत थोरे॥ आपु कंज मकरंद सुधा हृद हृदय रहत नित बोरे। हमसों कहत बिरह श्रमु जे है गगन कूप खनि खोरे॥ धान को गाउं प्रयार जानियत ज्ञान बिषय मन मोरे॥ तुलसी अधिक कहे न रहै गो रस गू-

लरि फल फीरे ॥ ४४ ॥

आली अति अनुचित उतरु न दीजै। सेवक सखा सनेही हरि को जो कछु कहै सो कीजै ॥ देश काल उपदेश संदेसो सादर सब सुनि लीजै। कै समुझिबो कि ये समुझेहैं हारेहु मानि सहीजै ॥ सखी सरोष प्रिय दोष बिचारत प्रेम प्रीति पतु छीजै। खग मृग मीन सुलभ सरसिज गति सुनि पाहनौ पसीजै ॥ ऊधो परम हितू हित सिखवत परमिति पहुंचि पतीजै। तुलसि दास अपराध आपनो नंदलाल बिनु जीजै ॥ ४५ ॥

ऊधो हैं बड़े कहैं सोइ कीजै। अलि पहिचानि प्रेम की परमिति उत्तरु फेरि न दीजे ॥ जननी जनक जरठ जाने जन परिजन लोगु न छीजै। दै पठयो पहिलो बिठतो ब्रज सादर सिर धरि लीजै ॥ कंस मारि जदुबंश सुखी कियो श्रवण सुजस सुनि लीजै। तुलसो त्यौं त्यौं होइगी गरुई ज्यौं ज्यौं कामरि भीजै ॥ ४६ ॥

कान्ह अलि भये नये गुरु ज्ञानी। तुम्हरे कहत आपने समुझत बात सही उर आनी॥ लिय अपनाइ लाइ चंदन तनु कछुक दुचाह उड़ानी। जरी सुंधाइ कूबरी कौतुक करि योगी बघा जुड़ानी ॥ ब्रज बसि रास बिलास मधुपुरी चेरी सौं रति मानी॥ योग योग ग्वालिनि वियोगिनि जान शिरोमणि जानी। कहिबेको कछु कहि जैहैं कछु रही आलि अरगानी। तुलसी हांथ पराये प्रियतम तुम प्रिय हांथ बिकानी ॥ ४७ ॥

सब मिलि साहस करिय सयानी। ब्रज आनिय मनाइ पायँ परि कान्ह कूबरी रानी॥ बसैं सुबास सुपास होहिं सब फि-

रि गोकुल रजधानी । महरि महर जीवहिं सुख जीवन खुलहिं मोद मणि खानी ॥ तजि अभिमान अनख अपनो हित कीजिय सुनि बर बानी । देखिबो दरस दूसरेहुं चौथेहुं बड़ो लाभ लघु हानी ॥ पावक परत निषिद्ध लाकरी होति अनल जग जानी । तुलसी सो तिहुं भुवन गाइबो नंद सुअन सनमानी ॥

कही है भली बात सबके मन मानी । प्रिय सम प्रिय सनेह भाजन सखि प्रीति रीति जग जानो ॥ भूषण भूति गरल परिहरि के हर मूरति उर आनी । मज्जन पान कियो कै सुरसरि क्रमनासा जल छानी ॥ पूंछ सो प्रेम बिरोध सिंह सो एहि बिचार हित हानी । कीजै कान्ह कूबरी सों नित नेहु करम मन बानी ॥ तुलसी तजिय कुचाल आनि अब सुधरे काम नसानी । आगे करि मधुकर मथुरा कहँ सोधिय सुदिन सयानो ४८

राग कान्हरा ।

हे हम समाचार सब पाये । अब बिशेषि देखे तुम देखे है कूबरी हांस कस लाये ॥ मथुरा बड़ो नगर नागर जन जिन जातहिं यदुनाथ पठाये । समुझि रहनि सुनि कहनि बिरह ब्रज अनख अमिय ओषध सरुहाये ॥ मधुकर रसिक शिरोमणि कहियत कौने यह रस रीति सिखाये । बिनु आखर को गीतु गाइ कै चाहत ग्वालि रिझाये ॥ फल पहिलेहि लह्यो ब्रजबासिन अब साधन उपदेशन आये । तुलसी अरति अजहुं नहिं बूझत कौन हेतु नंदलाल पठाये ॥ ५० ॥

कौन सुनै अलि को चतुराई ! अपनिहिं मति बिलास अकास में चाहत सियनि चलाई ॥ सरल सुलभ हरि भक्ति सु-

खाकर निगम पुराणन गाई ॥ तजि सोइ सुधा मनोरथ करि करि को मरिहैरी माई ॥ यद्यपि ताकेसोइ मारग प्रिय जाहि जह्यो बनि आई । मैं नक दशन कुलिश के मोदक कहत सुनत बौराई ॥ सगुण क्षीरनिधि तीर बसत व्रज तिहुं पुर बिदित बड़ाई । आक दुहत तुम कह्यो सो परिहरि हम यह मति नहिं पाई ॥ जानत हो यदुनाथ सबन की बुधि बिवेक जड़ताई । तुलसि दास जिनि कबहुं मधुप शठ हठ निशि दिन अंवराई ५१

राग केदारा ।

गोकुल प्रीति नित नई जानि । जाइ अनत सुनाइ मधुकर ज्ञान गिरा पुरानि ॥ मिलहिं योगी जरठ तिनहिं देखाउ निरगुण खानि । नवल नंद कुमार के व्रज सगुण सुयश बखानि ॥ तू जो हम आदरो सो तो नव कमलहो को कानि । तजहिं तुलसी समुझि यह उपदेश वे को बानि ॥ ५२ ॥

काहे कों कहत वचन संवारि । ज्ञान गाहक नाहिं ते व्रज मधुप अनत सिधारि ॥ युक्ति धूम बघारिबे को समुझि हैं न गंवारि । योगि जन मुनि मंडली मे जाइ रीती ढारि ॥ सुनै तिनको कोन तुलसो जिनहिं जीति न हारि । सकल खारो कियो चाहत मेघहु को वारि ॥ ५३ ॥

ऐसो होंहु जानति भृंग । नाहिने काहू लह्यो सुख प्रीति करि एक अंग ॥ कौन भीर जो नीरदहिं जोहि लागि रटत बिहंग ॥ मोन जल बिनु तलफि तनु तजै सलिल सहज असंग । मोर कछुक न मणिहिं जा के बिरह बिकल भुवंग ॥ व्याध बिसिख बिलोकि नहि कलगान लुब्ध कुरंग । श्याम घन गुण बारि छवि

मणि मुरलि तान तरंग ॥ लग्यो मन बहु भांति तुलसी होइ क्यों रस भंग ॥ ५४ ॥

ऊधो प्रीति करि निरमोहियनिसों को न भयो दुख दीन। सुनत समुझत कहत हम सब भई अति अप्रबीन॥ अहि कुरंग पतङ्ग कंज चकोर चातक मीन। बैठि इनकी पांति अब सुख चहत मन मति हीन॥ निठुरता अरु नेह कीगति कठिन परति कहीन। दास तुलसी सोच नित निज प्रेम जानि मलीन ५५

राग गौरी।

सुनत कुलिश सम बचन तिहारे। चित दै मधुप सनहु सोउ कारण जातें जात न प्राण हमारे॥ ज्ञान क्षपान समान लगत उर बिहरत छिन छिन होत नियारे। अवधि जरा जोरति हठि पुनि पुनि यातें रहत सहत दुख भारे॥ पावक बिरह समीर स्वास तनु तूल मिले तुम जारनि हारे। तिनहिं निदरि अपने हित कारण राखत नयन निपुन रखवारे॥ जीवन कठिन मरण को यह गति दुसह बिपति ब्रज नाथ निवारे। तुलसि दास यह दसा जानि जिय उचित होइ सो कहु अलि प्यारे॥ ५६ ॥

छपद सुनहु बर बचन हमारे। बिनु ब्रज नाथ ताप नयनन की कोनु हरै हरि अंतर कारे॥ कनक कुंभ भरि भरि पियूष जल बरषत सकल कल्प सत हारे। कदलि सीप चातक को कारज स्वाति बारि बिनु कोउ न सवांरे॥ सब अंग रुचिर किशोर श्याम घन जेहि हृदि जलज बसत हरि प्यारे। तेहि उर क्यों समाति बिराट बपु जो महि सरित सिंधु गिरि भारे॥ अ-

ज्यो अति प्रेम प्रलय के बट ज्यौं विपुल योग जल बोरन पारे। तुलसि दास ब्रजबनितनि को ब्रतु समरथ को करि यतन निवारे ॥ ५७ ॥

मधुप समझि देखहु मन मांही। प्रेम पियूष रूप उड़पति बिनु कैसे हो अलि पैयत रबि पांहीं ॥ यद्यपि तुम हित लागि कहत सुनि श्रवण वचन नहिं हृदय समाहीं। मिलिहि न पावक मों तुषार कन जो खोजत सत कल्प सिराहीं ॥ तुम कहिरहे हमहुं पचि हारी लोचन हठी तजत हठ नाहीं। तुलसि दास सोइ यतन करहु कछु बारिक श्याम इहां फिरि जांही ॥ ५८ ॥

मोंकों नयन भये रिपु माई। हरि बियोग तनु तजेहिं परम सुख राखहिं सोइ है बरि आई ॥ वरु मन कियो बहुत हित मेरो बारहिं बार काम दव लाई। बरषि नीर ये तबहिं बुझावहिं स्वारथ निपुन अधिक चतुराई ॥ ज्ञान परसु दै मधुप पठायो बिरह बेलि कैसेहु कटि जाई। सोथाक्यो सो रह्यो एकहो टक देखत इन्हको सहज सिंचाई ॥ हारत हूं न हारि मानत सखि शठ सुभाउ कंदुक की नाई। चातक जलज मीनहुंते भोरे समुझत नहिं उनकी निठुराई ॥ ये हठ निरत दरस लालच बस परे जंहां बुधि बल न बसाई। तुलसि दास इन परजु द्रवहिं हरि तो पुनि मिलैं बैरु बिसराई ॥ ५९ ॥

राग आसावरी ।

कहा भयो कपट जुआ जौ हारी। समर धीर महाबीर पांच पति क्यों दैहैं मोहि होन उघारी ॥ राज समाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्म धुर धारी। अबला अनघ अनव-

सर अनुचित होत हेरि करिहैं रखवारी ॥ यों मन गुनति दुशासन दुर्जन क्यों तकि गह्यो दुहुं कर सारी। सकुचि गात गोवति कमठी ज्यों हहरी हृदय बिकल भइ भारी ॥ अपनेनि को अपनो बिलोकि बल सकल आस बिस्वास बिसारी। हांथ उठाइ अनाथ नाथ सों पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारी ॥ तुलसी परखि प्रतीति प्रीति गति आरत पाल कृपाल मुरारी। बसन वेष राखी बिशेष लखि बिरुदावलि मूरति नर नारी ॥ ६० ॥

गह गह गगन दुन्दुभी बाजी। बरषि सुमन सुरगण गावत यश हरष मगन मुनि सुजन समाजी ॥ सानुज सगन ससचिव सुयोधन भये मुख मलिन खाइ खलबाजी। लाज गाज उन वनि कुचालि कलि परी बजाइ कहूं कहुं गाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भली भूरि भय भरीन भाजी। कहि पारथ सारथिहिं सराहत गई बहोरि गरीब निवाजी ॥ सिथिल सनेह मुदित मनहीं मन बसन बीच बिच बधू बिराजी। सभा सिंधु यदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भ्राजी ॥ युग युग जग साके केशव के शमन कलेश कुसाज सुसाजी। तुलसी को न होइ सुन कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजी ॥ ६१ ॥

इति श्री राम गीतावल्यां कृष्ण चरितं समाप्तम् ॥

———**———